जब बारिश सज़ाती है. . . .

"बारिश भी क्या चीज़ है ? वह सिर्फ पानी नही है" - माया यह बात सब लोगों से कहती है। खुद से, वह हर रोज़ कहती है।

जब रात में बारिश ज़ोर ताली बजाकर आती है, माया अपनी आप को संभाल नही पाता। उसकी कमरे की छोटी सी खिडकी से हाथ डालकर वह हर बूंद को दिल में लेती है। सिर्फ बारिश में ही नही, नहाते वक्त भी उसे बारिश की अहसास आती है।

बारिश की बारे में बिना रुके, बात करना तो उसकी आदत बन गई थी। उसकी यह आदत ही उसकी माँ की आँसू बन गई थी। जब भी वह बारिश का नाम लेते है, उसके साथ एक और नाम उसकी मूँह से निकलती है। वह नाम तो उसे ऐसे बनाया है - मयूरी।

मयूरी - एक आम लडकी। सबकी तरह हसती है, रोती है और बहुत सारा बात करती है। पता नही वह माया की दोस्त, नही "दिल" कैसा बना। "माया - वह किसी से बात नही करती है" - जब किसी और ने माया के बारे में ऐसा बताया, तो मयूरी सिर्फ उसे देखकर मुस्कुराया था। पर जल्द ही पुरानी माया गायब होने लगा था - एक नयी माया, जो मुस्कुराती है, सबसे बातें करती है। इसके इस बदलाव की सिर्फ एक वजह थी - मयूरी। माया की माँ को एक और बेटी मिल गई थी। - "मुझे कोई परिवार नही है, तो क्या मैं आपको "माँ"

बुला सकती है ?" - अपनी बेटी को जीना सिखादिया था मयूरी ने । तो उसके लिए मयूरी बेटी से भी बडा था। उसने माया की जिंदगी में रोशनी लाई थी - साथ में बारिश भी । माया को बदलते वक्त उसने बारिश को समझाना भी उसे सिखाया था ।

जैसे मायूरी ने सिखाया, उसने बारिश को दिल में लेना शुरू किया । अपनी हर खुशी और दुख में बारिश को साथ पकडा । पर अचानक कुछ तो हुआ । पता नही क्या, और कैसे, पर जिंदगी तो बदल गया था ।

वह दिन, जब मयूरी को देखा था, पेहली बार वह मुस्कुराना भूल गया था । बात तो बहुत की, पर कुछ तो उसने भूल गया था । वह मयूरी से अपनी आखरी मुलाकात है - माया ने कभी तो यह सोचा भी नही था । उसने क्यों ऐसा फैसला लिया, यह बात सोचते, सोचते माया उसका उत्तर मिलने का रास्ता ढूडने लगा । और मिलगया - मयूरी की तरह एक रस्सी में अपना जिंदगी खतम करना । क्या करू, कुछ लोग आकर वह रोक दिया ।

उस यात्रा का सजा तो माया को मिला था - अपने पैर में उसको मिले हुए ताला । एक कमरे में अपनी जिंदगी बिताने का सज़ा ।

अब तो वह खुश है । उसे पता है की जब मयूरी वापस आऊगा । वह अपने माँ पे भरोसा करने लगा । पेहले तो माँ से बोलती थी - आप झूठ बोल रही है ।" पर अब. . . . अब उसे पता है, "मयूरी आऊगा" ।

वह रोज़ अपनी खिडकी से हाथ बाहर करते हुए बोलती है - बारिश भि क्या

क्या चीज़ है ? वह सिर्फ पानी नहीं है । उसमें हँसी है, आँसू है, कई जिंदगियाँ है, कई यादें है, सब कुछ है । पर वह तो मयूरी की तरह है, कब आती है, कब जाती है, पता नहीं । पर ~~उसने भी~~ पर बारिश भी एक बात कहा है, मयूरी की तरह "मेरा इंतज़ार करना, एक न एक दिन मैं लौट आऊंगा । भरोसा करो ।" उसने कभी अपने वादा नहीं तोडा है । मयूरी मिलने आती है - कभी-कभी.. बारिश बनके, बूँद बनके, कई यादें बनके । बारिश तो वह है । उसके बूँद जब हाथ को झूते है, तब मयूरी मुझे गले लगाती है.... । पर बारिश..., वह कब आएगा ? आज ? कल ? या परसो ? इंतज़ार करना है, लंबी इंतज़ार.... । उसने बोला था जल्दी आऊँगा । पर, मैंने बिना सोचे उसके पास चलने का सोचा । उसकेलिए इतना बड़ा सज़ा ? इंतज़ार ही मेरी सजा है - पता है मुझे ।"

(**Note**: Graded Items may be published in **Schoolwki.** So write neatly. Don't fold paper. Don't write overleaf)